# हल्द्वानी : बुनना और उधेड़ना साथ-साथ

RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 40 अंक 20 हल्द्वानी सम्वत् 2081 सोमवार 21 अक्टूबर 2024 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

# बस अड्डा हटेगा और पार्किंग सहित अन्य सुविधाएं होंगी

## हल्द्वानी को महानगर बनने की जिद हुई तो रास्ते सकरे हो गये...

**कार्यालय प्रतिनिधि**

हल्द्वानी को महानगर बनने की जिद हुई तो रास्ते सकरे हो गये लेकिन जिद के आगे किसकी चलेगा? यही सवाल के साथ उत्तराखण्ड के बड़े शहरों और बेसुमार जनसंख्या वाले हल्द्वानी में बुनना और उधेड़ना साथ-साथ चल रहा है। शहर के बीचों बीच स्थित रोडवेज बस स्टेशन को हटाकर अन्यत्र करने की तैयारी भी है ताकि शहर में पार्किंग सहित अन्य सुविधाएं बनाई जा सकें। मुख्य बाजार में अतिक्रमण से बन्द कर दी गई नालियों को खुलवाने के लिये पटाल उखाड़ने पड़े। इस उधेड़-बुन में कई बार अतिक्रमण अभियान में जुटी टीम के साथ वह लोग उलझ रहे हैं जो वर्षों से अपना आसन लगाये बैठे हैं। अतिक्रमण हटाने से ज्यादा राजनीति की आग में लिपटे छुटभैय्ये बीच-बीच में इस बात को हवा दे रहे हैं कि स्थिति यथावत रहे, पुनर्वास हो, सुनवाई हो। ऐसा बयान किया जा रहा है मानो वह गरीबों के मसीहा हों। जबकि हल्द्वानी शहर की सच्चाई है कि जो जिधर से आया उसने कारोबार के लिये मनचाही की और इनके संरक्षण में राजनीति से जुड़े लोग हमेशा आगे रहे। आज जब शहर एकदम घिर चुका है शहर में गोदाम बनाकर अपने आशियानों को शहर से लगे गाँवों की ओर शिफ्ट कर दिया। इनकी नज़र भाबर की जमीन पर थी और इनके पास पैसा भी अथाह है। ऐसे में फैलते शहर में जिस प्रकार की अपसंस्कृति पनप रही है उसके लिये भी यह लोग जिम्मेदार हैं।

धिचपिच हो चुके मुख्य शहर से होकर जाने वाली सड़कों का सांस भी फूलने लगा था, इन्हें उधेड़ने के लिये चल रही कार्रवाई में बहुत कुछ बदलने वाला है। इस बीच नैनीताल-बरेली रोड में अब्दुला बिल्डिंग के पास मजदूरी का काम की तलाश में खड़े होन वाले मजदूरों के लिये प्रशासन ने लटुरिया बाबा मन्दिर से मेडिकल कालेज के आवासीय परिसर गेट के बीच का स्थान तय किया है। क्योंकि बरेली रोड पर प्रतिदिन सुबह सैकड़ों मजदूरों के खड़े होते ही जाम लग जाता है और आस पास रहने वाले भी बेहद परेशान थे।

उधर राजकीय मेडिकल कालेज के अधीन स्वामी राम कैंसर अस्पताल को स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट के रूप में विकसित करने के लिये 44 पेड़ों को काटने सहित समतलीकरण का कार्य चल रहा है। यहाँ पर 103 करोड़ की योजना में पहले चरण में 39 करोड़ रुपये की लागत से 120 बेड का वार्ड तैयार होगा। ब्रिडकुल के परियोजना अधिकारी ने बताया है कि अस्पताल को विकसित करने का लेआउट तैयार कर लिया गया है।

कुल मिलाकर शहर में चल रही उधेड़-बुन के बाद होने वाले नवनिर्माणों में पार्किंग सुविधा और सड़क से दूरी का ध्यान रखा जा रहा है। नहर-नाली-गूल घेरकर बैठे लोगों में धकधक भी हो रही है कि भविष्य में इन्हें उधेड़ा जाएगा। फिलहाल अभी कई बार यातायात रुट बदलेगा, विद्युत कटौती होगी, हंगामा होगा। शहर बदल रहा है.....

# सड़क चौड़ीकरण अपनी गति से जारी है

**पि.हि.प्रतिनिधि**

हल्द्वानी। महानगर के सौन्दर्यीकरण के लिये प्रशासन द्वारा छेड़े गये अभियान का चाल बनी हुई है। हालांकि अभी त्यौहारों के कारण धुंआधार तोड़फोड़ में रोक करते हुए सड़कों के आस-पास कार्य करवाया जा रहा है। मुख्य बाजार में अतिक्रमण हटाने के लिये सिटी मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में कार्रवाई की गई। अपनी दुकान के बाहर सड़क घेरकर सामान सजाने वाले या सड़क/फुटपाथ को किराये पर लगा देने वाले इस कार्रवाई से घबरा गये। उन्हें चेतावनी दी गई है कि फिर से अतिक्रमण करने की कोशिश न करें। यह अभियान जारी रहेगा।

इन दिनों काठगोदाम क्षेत्र में सड़क चौड़ीकरण के लिये रोडवेज वर्कशाप, पोस्टआफिस क्षेत्र में दीवार बनाने व समतलीकरण का कार्य चल रहा है। सड़क चौड़ीकरण से पहले मार्ग के दोनों ओर निश्चित सीमा तक उधेड़ने का जो कार्य चल रहा है इसमें बाधा बने पेड़ों को भी हटाया जा रहा है। कालाढूंगी रोड में लामाचौड़, पीलीकोठी के पास भी इस प्रकार का कार्य जारी है। ऐसे में सड़क और चौराहे काफी चौड़ी दिख रहे हैं लेकिन सड़क के दोनों ओर खड़े किये जा रहे सैकड़ों वाहनों से स्थिति जाम की यथावत बनी हुई है। दरअसल शहर में पार्किंग सुविधा सभी मार्गों पर जरूरी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

# हमेशा याद किये जाते रहेंगे उद्योगपति और दयालु रतन टाटा

**देश के जाने-माने उद्योगपति और टाटा संस के आजीवन चैयरमैन रतन टाटा का 9 अक्टूबर 2024 को रात करीब 11.30 बजे मुम्बई के ब्रीच कैंडी अस्पताल में अन्तिम सांस ली। वह उद्योगपति के साथ ही बहुत दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। स्व.रतन टाटा को हमेशा याद किया जायेगा।**

28 दिसम्बर 1937 को बॉम्बे में जन्मे रतन नवल टाटा ने 1991 में टाटा समूह की कमान संभाली और उन्हें दुनिया के कारोबारी नक्शे में नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। अपने परोपकारी कार्यों के लिये पहचाने जाने वाले रतन टाटा को 2000 में पद्मभूषण और 2008 में पद्म विभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया। 1961 में टाटा स्टील में बतौर मैनेजर काम शुरू करने वाले रतन टाटा ने समूह के विख्यात चैयरमैन जेआरडी टाटा के अवकाश ग्रहण करने के बाद उनका पद संभालते हुए 1991 से 2012 तक करीब 22 साल समूह के अध्यक्ष रहे। इसके बाद साइरस मिस्त्री के अध्यक्ष पद से हटने के बाद

करीब चार महीने तक अंतरिम अध्यक्ष रहे। अध्यक्ष पद से हटने के बावजूद टाटा इस समूह के कई धर्मार्थ ट्रस्टों से लगातार जुड़े रहे। विमान उड़ाने और कारों के शौकीन रतन ने जिन्दगी के हर हिस्से को समझा और आम आदमी की जरूरतों को महसूस किया। उनका नाम ही इतना है कि हर उम्र का उन्हें सम्मान देता रहा और अब स्मरण कर रहा है। भारतीय उद्योग जगत के शिखर पुरुष के सफर में अड़चन इसी कारण नहीं आई क्योंकि उनका आगाज बेहद साधारण दायित्व से हुआ था। उन्होंने टाटा समूह के उत्तराधिकारी होने के बावजूद अपने कैरीअर की शुरुआत टाटा स्टील के संयंत्र में भट्टी में चूना डालने वाले कामगार के तौर पर की।

उद्योग जगत के बादशाह होने के बावजूद रतन टाटा का सम्मान इसलिए भी है कि उन्होंने समाज के दु:ख-दर्द को समझा और धर्मार्थ ट्रस्टों में जुड़ने के साथ ही जरूरतमंदों को हमेशा सहयोग किया। सारी सुख-सुविधाओं के बाद भी वह बेहद सरल और साधू प्रवृत्ति के थे। उनकी प्रवृत्ति और प्रकृत्ति देखकर हर उस कारोबारी को सीख लेनी चाहिये जो छुटपुट कारोबार के फलते ही अपने समाज में दबंगता करना चाहता है और आम को छोड़ उन खास लोगों से जुड़ जाता है जो गलत रास्तों से आगे बढ़ रहे हैं। रतन टाटा वाकेई देश के 'रतन' थे।

## देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

### धौलागिरी चोटी से गिरकर 5 की मौत

काठमाण्डो। नोपाल में विश्व की सातवीं सबसे ऊँची चोटी माउंट धौलागिरी से गिरकर रूस के 5 पर्वतारोहियों की की मौत हो गई। माना जा रहा है कि शिखर पर चढ़ाई कर रहे अलेक्जेंडर दुशेयको, ओलेर क्रुग्लोव, व्लादिमीर चिस्तिकोव, मिखाइल नोसेको और दिमित्री शपिलेवोई फिसल कर गिर गये।

### हिंटन-हॉपफील्ड को भौतिकी का नोबेल

स्टीकहोम। मशीन लर्निंग की नींव रखने वाले हॉपफील्ड और जेफ्री हिंटन को भौतिकी का नोबेल दिया गया है। नोबेल समिति ने कहा दोनों ने भौतिकी के उपकरणों का इस्तेमाल कर रहे अविष्कार किया उसने मशीन लर्निंग की आधारशिला रखी।

### पनडुब्बी और ड्रोन से बढ़ेगी मारक क्षमता

नई दिल्ली। भारतीय नौसेना के लिए दो परमाणु पनडुब्बियों का स्वदेशी स्तर पर ही निर्माण करेगा और सेना व वायुसेना के लिऐ अमेरिका से 31 प्रीडेटर ड्रोन खरीदेगा। सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति ने इस सम्बन्ध में 80,000 करोड़ रुपये के प्रमुख सौदों को मंजूरी दी। इससे समुद्र से लेकर जमीन और आसमान तक मारक और निगरानी क्षमता में प्रभावी वृद्धि होगी।

### द.कोरियाई हान कांग को साहित्य का नोबेल

स्टॉकहोम। दक्षिण कोरिया की लेखिका हान कांग को 2024 के साहित्य का नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया है। उन्हें यह पुरस्कार उनके गहन काव्यात्मक गद्य के लिए प्रदान किया गया। नोबेल समिति ने उनके लेखन को ऐतिहासिक आघातों व मानव जीवन की नाजुकता को उजागर करने वाला बताया है।

## फसक

# दाज्यू, चुनाव के लिये फुर्ती आ जाने वाली ठैरी

## निपटाना-चिपटाना सब खुलेआम हो रहा है बल

दाज्यू, रामलीला के बाद छात्र संघ चुनाव वाले जोश में हैं। हल्द्वानी और नैनीताल में तो चुनाव करवाने के लिये छात्र नेताओं ने धरना भी दे डाला। दाज्यू, चुनाव के लिये फुर्ती आ जाने वाली ठैरी। नगर निकाय चुनाव के लिये रब्बुदर भट्ट जी दिन-रात जुट गये हैं। कह रहे थे- 'इस बार सीट निकालनी जरूरी है।'

दाज्यू, हल्द्वानी नगर निगम सीट पर बहुत गनर-मनर हो रही है बल। विधायक सुमित की चाह है कोई कालाढूंगी सीट इलाके वाला पार्टी की ओर से दावेदारी करता तो राजनीति का गणित ठीक हो जाता। अब विधायक को कौन समझाए कि झूला झुलाने वाले बहुत हैं, कब कौन किसको.....। कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत अभी रामलीला से दशरथ का अभिनय कर लौटे ही हैं। वह भी अपना गणित लगाएंगे।

चुनाव का मौसम ही ऐसा होने वाला हुआ। निपटाना-चिपटाना सब खुलेआम हो रहा है बल। किसी का भरोसा नहीं कब कौन चिपट पड़े और दनादन सवाल कर डाले। नैनीताल में डांडिया नाटइ की धूम मची। दाज्यू, चारों ओर झमाझम हो रही है। डिग्री कालेज में तीन महीने गुजरने के बाद फ्रेशर पार्टी में खूब गजबज हुई। 'कजरारे कजरारे नैना कारे' गीत में नाच रहा गोलू बहुत खुश है। कह रहा था- 'लबली मैडम ने भी बहुत सहयोग किया। टाई पहनाने से लेकर मैकप तक का इन्तजाम।' दाज्यू, गोलू को कौन समझाने लगे कि जमाना बड़ा बेढप हो चुका है। नाड़ा बांधना भी हुनर ही है। दुष्कर्म और पॉक्सो मामले में नामजद आरोपी मुकेश बोरा की जमानत अर्जी भी खारिज हो चुकी है। मुकेश तो बड़ा आदमी हुआ, किच्छा के सिरौलीकला क्षेत्र में तो एक युवक को छेड़छाड़ का विरोध करने पर 13 वर्षीय किशोर ने तमंचे से गोली मार दी बल। उसका क्या होगा? हल्द्वानी के मुखानी क्षेत्र कालाढूंगी विधानसभा क्षेत्र में भी पता नहीं क्या क्या होने लगा है। बीच-बीच में बबंडर लगा ठैरा। दूसरे समुदाय के युवक ने ब्यूटी पार्लर में काम करने वाली युवती पर शादी और धर्मान्तरण का दबाव बनाया जिसे पकड़कर पुलिस को सौंप दिया। कमलुवागांजा में रामलीला का हाल बुरा हो चुका है। पूरनपुर नैनवाल निवासी उमेश की उसी के रिश्ते के भाई दिनेश ने तमंचे से गोली मारकर हत्या कर दी। उस समय परशुराम सम्वाद चल रहा था। दाज्यू, चुनाव के लिये जुगाड़ बनाने वाले अन्दरखाने लगे हैं बल लेकिन पुलिस ने बरेली से हरिद्वार स्मैक ला रहे तीन युवाओं को दबोच लिया। बता रहे हैं कि 317 ग्राम स्मैक पकड़ी, जिसकी कीमत 95 लाख होती है।

सरकार कह रही है- भयमुक्त वातावरण बनाया जा रहा है और अफसर सुबह से ही मीटिंग, दौरे में जुटे हुए हैं। महिला सुरक्षा को लेकर पुलिस भी ज्यादा दौड़ रही है। इतने इन्तजाम के बाद भी फुर्तीले सुराख ढूंढ ही लेने वाले ठैरे। सोमेश्वर थाना क्षेत्र के एक किशोर पर 5 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म का आरोप लगा है। किच्छा कोतवाली पुलिस ने बॅडिया क्षेत्र के एक घर से नशे की दो हजार गोलियों के साथ तीन तस्करों को पकड़ा है। दुनिया है, इसमें गम में खुशी और खुशी में गम मिलने वाला ठैरा। बाजपुर के केलाखेड़ा क्षेत्र में रामपुर स्वार से आई बारात जब दुल्हन के घर पहुँची तो जूता चुराने की रश्म में बाराती-घराती पक्ष में लट्ठ चल पड़े। घायलों को अस्पताल पहुँचाया गया। -तुम्हारा भुली झकरुवा

# गंगोलीहाट-बेरीनाग की राजनीति में हलचल

## वायरल हो रही आडियो रिकार्डिंग, विधायक फकीर दा चर्चा में

**पि.हि.प्रतिनिधि**

गंगोलीहाट-बेरीनाग की राजनीति में फिर से हलचल है और इसके पीछे वायरल हो रही आडियो रिकार्डिंग मुख्य है। वैसे तो इस विधानसभा के किस्से ही किस्से हैं क्योंकि चाह किसी की, मांग किसी की, इच्छा किसी की, भरपाई किसी की जैसा होता रहा है। जाने-अनजाने वोट पाने वाले नेता इतना भूल जाते हैं कि वह क्या करने जा रहे हैं।

बेरीनाग और गंगोलीहाट दोनों ही जगह इन दिनों निकाय चुनावों के लिये भी गोटी बैठाने का काम चल रहा है लेकिन क्षेत्रीय विधायक फकीर राम टम्टा के बेहद चर्चे हैं। वैसे तो फकीर दा सबके प्रिय नेता हैं लेकिन जब किसी पार्टी विशेष में जुड़े हों तो उसकी लय में चलना ही होता है। वह भी भाजपा के पुराने कार्यकर्ता हैं और विधायक बनने के बाद से लगातार अपने कार्यकर्ताओं से सम्पर्क में हैं लेकिन यह भी साफ दिखाई दे रहा है कि धड़ेबाजी में कोई कमी नहीं है। इस सीट पर पहले पार्टी की मीना गंगोला विधायक थीं। विपक्ष की ओर से पहले निर्दलीय फिर दूसरी बार कांग्रेस टिकट पर खजान गुड्डू ने अपनी स्थिति सुदृढ़ की है। टिकट की चाह में सामाजिक कार्यकर्ता भीम कुमार भी रहे हैं लेकिन किस्मत ने उनका साथ नहीं दिया।

इन दिनों एक कथित ऑडियो वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया में कथित कॉल का ऑडियो दो मिनट चार सेकेंड का है। इसमें मनगढ़ का एक व्यक्ति विधायक से पीड़ितों के विस्थापन को लेकर ठोस कदम उठाने की मांग कर रहा है, विधायक कॉल के बीच अभद्र भाषा का प्रयोग कर रहे हैं। इस मामले पर विधायक का कहना है कि मोबाइल टेक्नोलॉजी के बारे में उन्हें ज्यादा कुछ नहीं आता। उनकी बातों की एडिटिंग करके छवि धूमिल करने की कोशिश की जा रही है।

बताया जा रहा है कि सोशल मीडिया में यह कथित ऑडियो काल में मनगढ़ के हरीश सिंह विधायक को ताऊ जी कहकर सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि पीड़ितों की समस्या को लेकर एक रिपोर्ट बना दो। जवाब में विधायक कहते हैं कि प्रशासन अपना काम करता है, रिपोर्ट उनके हाथ थोड़ी ही लगती है। उनके हाथ का जो काम था वह कर चुके। उन्होंने जमीन तालशने के लिए भी कहा है। आडियो रिकार्डिंग की चर्चा फैलने पर विधायक फकीर राम का कहना है कि मनगढ़ गाँव में घटना के दौरान संगठन के चुनाव प्रचार में था। हेलीकाप्टर से पिथौरागढ़ पहुँचकर डीएम से मनगढ़ में आई आपदा को लेकर पीड़ित परिवारों की व्यवस्था के निर्देश दिए। मेरी बातों की एडिटिंग करके छवि धूमिल करने की कोशिश की जा रही है। इसके बाद विधायक फकीर राम ने मनगढ़ क्षेत्र का दौरा करते हुए ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और अधिकारियों को फोन कर तत्काल प्रभाव से खड़िया बन्द कराने व पीड़ितों को मुआवजा के निर्देश दिए। उनके साथ दौरे पर प्रधान राजेन्द्र सिंह, प्रधान राजेन्द्र प्रसाद, धीरज बिष्ट, दीपक नेवलिया, कवीन्द्र सिंह, विक्रम सिंह मौजूद थे।

बताते चलें कि तहसील मुख्यालय से 12 किमी दूर मनगढ़ में 12 दिसम्बर को खड़िया खनन के मलबे से करीब 6 घर ध्वस्त हो गये। इस इलाके में पहले से इस प्रकार की आशंका व्यक्त की जा रही थी इस प्रकार की घटनाओं के पीछे जालिम राजनीति भी काम करती है इसे समझना होगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

संस्कृति

# पुरानी जोहार बोली सौकिया खून, रंकश आंखिर किस झंझावात को सह नहीं सकी?

**जगदीश सिंह बृजवाल**

इतिहासकारों का कथन है कि- जोहार घाटी के शौका जनजाति का इतिहास का उदय लगभग छठी-सातवीं शताब्दी के करीब हुआ। उनकी प्रकृति, प्रवृत्ति, शारीरिक बनावट, मुख-मुद्रा मंगोलयाड तिब्बती-बर्मी परिवार भाषायी से सम्बन्ध जोड़ते हैं तथा शक जाति के लक्षण पूर्णत: दिखाई देती है। भारत भूमि से शक साम्राज्य का उन्मूलन तथा गुप्त नरेशों द्वारा खदेड़े जाने पर जिनकी टोलियां उत्तर की ओर बीहड़ पहाड़ों के कन्दराओं में आकर सुरक्षित महसूस करने लगे थे। इन्हीं की दो टोली महान हिमालय की तलहटी जोहार घाटी की भूमि में निवास करने लगे थे। ये जोहार के आदम जाति के मानव थे।

जोहार के इतिहास का अध्ययन तीन काल विभाजन से किया जाता है- प्रथम काल हल्दुवा-पिंगलुवा ,दूसरा पंज्वारी काल, तृतीय आधुनिक काल। इन तीनों कालों में जब-जब समाज में सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन का दौर आया तब-तब तब उथल-पुथल से नये सामाजिक अध्याय की शुरुआत भी होती रही किन्तु कई झंझावात को सहते आज भी जोहार के लोकसाहित्य की समृद्धता अन्य पहाड़ी क्षेत्र के जनजातियों से कहीं अधिक दिखती है। आज भी निरन्तर जो सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन का दौर वर्तमान में दिख रहा है जिससे समाज में भयावह स्थिति उत्पन्न है तथा समुदाय का संस्कृति, सांस्कृतिक उदासीनता, नयी पीढ़ी से निराशा कहीं बजूद का विलोपन न कर दे? सन्देहास्पद है।

जोहारी शौका समुदाय अपनी सुदृढ़ संस्कृति, सांस्कृतिक जीवन शैली, प्रतिष्ठित व्यापारी के रूप में सदियों से भारत-तिब्बत सीमा, हिमालय के आर-पार महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका में अपने को स्थापित कर चुके थे। जिनकी सांस्ब्रतिक परम्परा-बोली-भाषा, खान-पान, रहन-सहन, वेष-भूषा, धार्मिक मान्यताएं, लोकसंस्कृति के गीत-संगीत, नृत्य जो उल्लासमय जीवन शैली के उत्कृष्टता को दिखाता हैं।

शौका अदम्य साहसी, कठोर परिश्रमी, उद्यमी, कर्त्तव्यपरायता हर परिस्थिति को अपने अनुसार ढालने में महारत थे। समाज में कमी उतार-चढाव आने के बाबजूद सामाजिक एकता, आपसी सौहार्दता बनाने में सदैव सक्षम रहे।

प्रथम काल के मानव हल्दुवा-पिंगलुवा जो नाग, अश्व देव उपासक तथा प्रकृति पूजक भी थे, जो जोहार घाटी में स्थायी निवास करते थे। बाहरी दुनिया से इनका सम्पर्क न था। चोलाई, उवा, फांपर, मांस भोजन पर अपना जीवन व्यतीत करते थे। वर्ष भर यही रहते थे। इनका अवसान सामाजिक परिवर्तन तथा पंज्वारीयो का अभ्युदय मध्यकाल का ज्ञान कराती है।

मध्यकाल के पंज्वारी को शाक्य लामा के शिष्य द्वारा जोहार घाटी में बसाया गया था। जिसमें- हेलम्बा, ल्वांल, बरफाल, रहलम्वाल, निखुर्पा थे। जिन्होंने बाहरी दुनिया तिब्बत-गोरीफाट (माल), चंदों के शासनकाल, कुमाऊँ, कत्यूरी शासन तक भी सम्पर्क स्थापित करना प्रारम्भ कर लिया। तिजारत करने लगे थे। इस काल की समृद्धता धनाढ्य सुनपति शौका जो ल्वांल जाति में उत्पन्न जोहार के विभूति थे, इनकी रूपवती पुत्री राजूली -मालूशाही का प्रेम प्रसंग गाथा, कहानी भी इसी काल की देन हैं सुनपति के वंशजों का अवसान 15 वभ शताब्दी के उत्तराद्ध में हो गया था।

जोहार घाटी का आधुनिक युग धामू रावत मिरम्वाल गढ़तोक के राजा के सेना में उच्च पद पर आसीन जो बोतछागले के आदेशानुसार दल-बल के साथ जोहार घाटी में आ धमका तथा गढ़वाल से सम्बन्धित होने के कारण अपने साथ मिरम्वालों के अतिरिक्त अन्य जोहारियों को भी जोहार में बसाया जिसमें- बिल्जू, मापा, रिलकोट, मर्तोली पहले बसा था। आधुनिक काल का अभ्युदय हो गया था। वर्चस्व संघर्ष में पुराने जोहारी मात खा गए। आधुनिक जोहारी युग का पदार्पण हो गया।

आधुनिक जोहारियों में आंशिक हिन्दूवी संस्कार का प्रभाव था, जिस कारण पंज्वारीयों के सामाजिक परम्पराओं का उन्मूलन होना स्वाभाविक था किन्तु कुछ धार्मिक मान्यताएं भी साथ-साथ चलती रही। जिससे अतीत की जानकारीयां मिलती हैं। अब जोहारियों का तिजारत क्षेत्र ने विस्तृत रूप ले चुका था, जोहार की समृद्धता बढ़ती गई। जोहारियो का सम्पर्क तिब्बत के हुनियाओ तथा गोरीफाट में माल क्षेत्र बरपटियाओं तक दक्षिण में खस राजपूत, कुमार्डनियों से होता रहा जहाँ कुमाऊनी बोली का अधिक प्रचलन था।

गिर्सयन ने जोहारी बोली भाषा को सौकिया खून, रंकश नाम दिया है, जो अब बिलुप्त हो चुका है। टोला गाँव के बरू पधान तथा उसके पिता जैंता जो रंकश, शौकीया खून बोली के अच्छे अंतिम जानकार आधुनिक जोहारी थे। उसने 1854 में हेनरी स्ट्रैची के साथ मान सरोवर यात्र किया था। इस समय शौकीया खून, रकंश जो जोहार तथा गोरीफाट बरपटिया क्षेत्र में बोली जाती थी जिनकी जनसंख्या 614 थी, कुमाउंनी, बरबटिया हुनिया बोलने वाले अधिक थे। जोहार के लोग कुमाउंनी क्षेत्र में अधिक व्यापार करते रहे। जिस कारण पुरानी बोली त्यागकर नयी कुमाउंनी जोहारी शैली बोली का निर्माण हुआ जिसमें- जोहारी, कुमाउंनी, तिब्बती, नेपाली अंग्रेजी आदि बोली के शब्दों के सम्मिश्रण से नया जोहारी बोली चलन में आ गया जिसमें लिंग, बचन, क्रिया का भैद नहीं होता है। शेरिंग ने कुमाउंनी बोली की श्रेणी में जोहारी बोली को भी स्थान दिया है। अब पुरानी जोहारी बोली विलुप्त हो चुकी हैं।

जिस परिवर्तन के कारण सदियों से चली आ रही धरोहर को न बचा सके। पहले पहल तो इस बोली को नये पुराने सभी जोहारी बोलते रहे थे। जिसका प्रमाण बरू पधान आधुनिक जोहारी हैं किन्तु आंशिक हिन्दूवी संस्कार के चलते तथा कुमाउंनी क्षेत्र में अधिक तिजारत के कारण मूल बोली से बिलख हो गये। जोहारी कुमाउंनी शैली की बोली विकसित हो गया था। अब नये जोहारी बोली को भी जोहारी लोग बड़े निराले, अच्छे अंदाज में अपनी वाणी से प्रवाहित करते दिखने लगे हैं। जिस बोली ने भी शौकाओं के अन्तर्मन से भाव सम्बन्ध स्थापित कर लिया है, यद्यपि एक बोली को सदा के लिए विदाई दे दी तथा दूसरी बोली को अपना लिया। सौकिया खून, रंकश को बचा न सके। आज के जोहारी बोली भी अब दिलो-दिमाग से अलगाव की स्वीकृति नहीं देती हैं।

जोहारी शौकाओं की वर्तमान सामाजिक स्थिति समाज की विछिन्नता, युवा पीढ़ी की उदासीनता सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन का दौर कई सदीयो से चली आ रही संस्कृति के विशिष्टता की पहचान को सदा के लिए विदाई न दें। क्योंकि भारत भूमि में कयी जाति समुदाय हमेशा के लिए अपनी संस्कृति के अस्तित्व को खो चुके हैं कटु सत्य हैं.संरक्षण संवर्धन के लिए कौन से ठोस कदम निकला है। हम जोहारियो के लिए विचारणीय प्रश्न है।

## ज्योतिष की बातें- 200

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य किसी भी ग्रह का गोचर परिवर्तन नहीं हो रहा है पूरे सप्ताह अन्य सभी ग्रह यथावत् गोचर करते रहेंगे।

23 अक्टूबर 2024 को सायनमान से सूर्य वृश्चिक राशि में प्रवेश करेगा। अत: अगले दो माह त्रिफला चूर्ण में छठा भाग चीनी मिलाकर सेवन करना स्वास्थ्यप्रद रहेगा।

इस स्तम्भ में प्रकाशित गोचरफल वास्तव में ग्रह विशेष का स्वतन्त्र गोचर फल होता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली, दशा आदि पर भी निर्भर करता है। जिन जातकों के पास जन्मकुण्डली अथवा जन्म विवरण उपलब्ध नहह्न होता है उनके लिए उनकी राशि के अनुसार स्थूल रूप से गोचर फल का आंकलन हो जाता है। यहाँ पर प्रस्तुत गोचर फल मन्त्रेश्वर रचित ग्रन्थ फलदीपिका के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। इस अंक के साथ ही इस स्थाई स्तम्भ ह्ज्योतिष की बातेंह्न के कुल 4 वर्ष और 200 भाग पूर्ण हो रहे हैं। इस सफलता के लिए मैं सम्पादक महोदय और 'पिघलता हिमालय' के पाठकों को धन्यवाद देना चाहता हूँ। सभी के स्नेह से आगे भी इसी प्रकार गोचर फल और पर्व विशेष के मुहूर्त आदि की जानकारी प्रस्तुत की जाती रहेगी। आशा है कि ज्योतिष की सामान्य जानकारी रखने वाले व्यक्तियों को यह स्तम्भ अधिक रुचिकर लगेगा ।

शुभं भवतु !!

**-ओंकार नाथ कोष्टा**
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

## सम्यक् विचार- 91

### आनलाइन ठगी की वास्तविकता

आजकल साइबर क्राइम बढ़ते चले जा रहे हैं। उसमें भी ऑनलाइन ठगी का कारोबार बहुत बढ़ चुका है। फेसबुक मैसेंजर के द्वारा, एसएमएस के द्वारा, वीडियो कॉलिंलग के द्वारा, व्हाट्सएप कॉल के द्वारा, तरह-तरह से अपराधी व्यक्ति से सम्पर्क करते हैं। कभी पुलिस वाला बनकर 'तुम्हारा बेटा मेरे चंगुल में है', 'बेटी सेक्स रैकेट में पकड़ी गई है' आदि बातें करके आदमी को डरा देते हैं और पैसा हड़प लेते हैं। कभी 'बैंक अकाउंट लॉक हो गया है' इस प्रकार की बातें करके व्यक्ति को डराकर ओटीपी प्राप्त करके ठगी करते हैं। इन अपराधों से बचने के लिए सरकार तरह-तरह के विज्ञापन करती है, एसएमएस भेजकर जनता को जागरुक भी करती है, लेकिन व्यक्ति जितना जागरूक होता जाता है उतने ही ठगी के नये-नये तरीके सामने आते जाते हैं। एक भी साइबर अपराधी आज तक पकड़ा नहीं गया। जब कभी थाने में कोई FIR लिखाता है तो पुलिस इस शर्त पर कि अपनी कंप्लेंट वापस ले लो, कभी-कभी पैसा वापस दिलवा देती है।

गम्भीरता से विचार करें तो इस ठगी में पैसा एक खाते से दूसरे खाते में ट्रांसफर होता है। बैंक के पास सभी खातों का पूर्ण विवरण उपलब्ध होता है और जिस फोन नम्बर से अपराधी बातचीत करते हैं उन फोन नम्बर के धारक का भी सारा रिकार्ड उपलब्ध होता है। फिर भी अपराधी पकड़ में क्यों नहह्न आते क्योंकि इस ऑनलाइन ठगी के अपराध में बैंक, पुलिस विभाग और नेता तीनों मिले हुए होते हैं। यह सच्चाह्न है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इसलिए बचाएगा कोई नहीं, स्वयं ही सावधान रहना चाहिये।

**-सरल**

# उत्तराखण्ड को पांचवी अनुसूचि में शामिल किया जाए

हल्द्वानी। पहाड़ी आर्मी के सम्मेलन में सरकार से सख्त भू-कानून, मूल निवास और 5वीं अनुसूची के लिये कहा गया। वक्ताओं ने कहा कि उत्तराखण्ड को यूं ही बर्बाद नहीं होने देंगे। यहाँ के मूल निवासियों को कुचलने की हर कोशिश का मुंहतोड़ जबाब दिया जायेगा।

पहाड़ी आर्मी के संस्थापक अध्यक्ष हरीश रावत ने कहा कि भाजपा और कांग्रेस के नेताओं को उत्तराखण्ड को पांचवी अनुसूची में शामिल करने के लिये एक होना होगा। 1931 में कुमाऊँ और गढ़वाल के पहाड़ी इलाकों को संयुक्त प्रान्त ने यह अधिकार दिया था। 1971 में इस दर्जे को समाप्त कर दिया गया। कहा कि भू कानून, मूल निवास और उत्तराखण्ड को 5वीं अनुसूची में शामिल करने के लिये पहाड़ी आर्मी बड़े आन्दोलन को तैयार है। इसमें सभी ने सहयोग करना होगा। इसी क्रम में यह सम्मेलन है। कहा कि अपनी संस्कृति, विरासत, जल, जंगल और जमीन बचाने के लिए उत्तराखण्ड लम्बे समय से आन्दोलित है। यह भी कहा कि ट्राइबल स्टेट बनने से राज्य को कोई नुकसान नहीं है। इससे पहाड़ के लोगों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे। इस मौके पर संजय राठौर, कैलाश डालाकोटी, गौरव सिंह आदि मौजूद थे।

बात पर बात

# उत्तराखण्ड में मेट्रो ट्रेन संचालित हों, पर्यटन विस्तार होगा

**नन्दा बल्लभ पाण्डे**

हमारे देश भारत के अनेक नगरों में मेट्रो ट्रेन की व्यवस्था की गई है। जैसे- दिल्ली, लखनऊ, मुम्बई व कोलकाता आदि नगरों में। इन मेट्रो ट्रेनों के संचालित होने की वजह से यात्रियों को सफर करने में आसानी होती है तथा सड़क यातायात की भीड़भाड़ से काफी मुक्ति मिलती है। इसी प्रकार यदि उत्तराखण्ड में भी मेट्रो ट्रेन संचालित की जाए तो इससे पर्यटन में यात्रियों को काफी सुविधाएं मिलेंगी। साथ ही साथ इन्हें ऊर्जा (सोलर सिस्टम) से संचालित की जाए तो ईधन आदि के प्रयोग में काफी बचत भी होगी। प्रारम्भ में प्रयोग के तौर पर देहरादून-ऋषिकेश हरिद्वार, काशीपुर-रामनगर-रुद्रपुर-हल्द्वानी तक संचालित की जाए तथा इस प्रयोग में सफलता मिलने पर इसका विस्तार किया जाए। जैसे देहरादून-ऋषिकेश हरिद्वार, काशीपुर-रामनगर, रामनगर कालाढूंगी-हल्द्वानी से यह मार्ग नैनीताल तक योजना बढ़ाई जाए तो सड़क यातायात का ट्रैफिक दबाव काफभ कम हो जाएगा और सड़क यातायात की भीड़ कम हो जायेगी। मेट्रो ट्रेन में किराया भाड़ा भी कम होगा तथा पर्वतीय अंचलों में पर्यटन तरक्की करेगा।

सरकार को इस पर्वतीय प्रदेश की इस योजना को संचालित करने में गम्भीरता से विचार करना चाहिये। पर्यटन की व्यवस्था व यात्रियों की सुविधा के लिये यह बहुत उपयोगी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## बग्वाई कौतिक 3, 4, 5 नवम्बर को

द्वाराहाट। बग्वालीपोखर में होने वाला बग्वाई कौतिक 3, 4 व 5 नवम्बर को होगा। इसकी तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। डॉ.दीपक मेहता ने बताया है कि स्थानीय कलाकारों को मंच प्रदान करने के अलावा उल्लेनीय कार्यों सहित समर्पित लोगों को प्रोत्साहित करने की परिकल्पना भी इस कौतिक में है।

## हरगोविंद महाकाली मंदिर के अध्यक्ष

गंगोलीहाट। महाकाली मन्दिर समिति की बैठक में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें हरगोविन्दर रावल को अध्यक्ष बनाया गया। नीरज रावत उपाध्यक्ष, कमल रावल सचिव, प्रकाश रावल संयुक्त सचिव, नरेन्द्र रावल कोषाध्यक्ष, दीपक रावल संगठन मंत्री चुने गये।

## महाराणा प्रताप की प्रतिमा का लोकार्पण

सितारगंज। खटीमा चौक पर महाराणा प्रताप की भव्य प्रतिमा का विधायक सौरभ बहुगुणा व पूर्व मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा ने लोकार्पण किया। साथ ही विधानसभा क्षेत्र में करोड़ों की लागत से पार्क, पार्किंग, इंडोर स्टेडियम, अमूल आइस्क्रीम पावडर फैक्ट्री सहित सिडकुल में एक्वा पार्क खोले जाने की जानकारी दी।

## छात्र संघ चुनाव 25 अक्टूबर को

प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में छात्रसंघ चुनाव 25 अक्टूबर को कराए जाएंगे। उच्चशिक्षा मंत्री धनसिंह रावत ने सितम्बर अन्तिम सप्ताह में चुनाव की बात कही थी लेकिन तिथि घोषित न होने पर छात्र नेता आन्दोलन पर उतर आए थे। उच्चशिक्षा सचिव डॉ.रंजीत सिन्हा ने अब तिथि तय हो चुकी है।

## रूपालीगाड़ तक मार्ग बनेगा

चम्पावत। तामली से रूपालीगाड़ तक 8 किमी मार्ग को यातायात योग्य बनाने की स्वीकृति देते हुए सीएम ने क्षेत्रवासियों को दीपावली का उपहार दिया है। दरअसल तल्लोदश तामली क्षेत्र के लोगों के लिये यातायात सुविधा न होने से अपने प्रियजनों के अन्तिम संस्कार यात्रा में जाना बेहद कष्टकारी था।

## मोहान दवा फैक्ट्री के निजीकरण का विरोध

अल्मोड़ा। मोहन स्थित आईएमसीपीएल दवा फैक्ट्री के निजीकरण का विरोध जारी है। प्रदर्शन कर रहे कांग्रेस कार्यकर्ताओं सहित कई कर्मचारी आन्दोलन के समर्थन में हैं। कर्मचारियों ने फैक्ट्री परिसर में नारेबाजी की। कहा निजीकरण कर यहाँ के कर्मचारियों और पहाड़ की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

# हरि प्रदर्शनी की तैयारी, मल्ला जोहार विकास समिति का एजीएम भी होगा

मुनस्यारी। 5 से 7 नवम्बर को मल्ला दुम्मर में होने वाली हरि प्रदर्शनी तैयारी जोरों पर है। इसके लिये हल्द्वानी में भी बैठक कर तैयारियों पर चर्चा हुई है। समितिसे जुड़े लोग सम्पर्क में लगे हैं। स्वतंत्रता सेनानी हरिसिंह जंगपांगी की पुण्य स्मृति में होने वाले आयोजन में कृषि बागवानी, कुटीर उद्योग हथकरघा प्रदर्शनी की परम्परागत प्रदर्शनी के लिये क्षेत्रवासियों सहित स्थानीय कलाकारों में अति उत्साह दिखाई दे रहा है। इसी दौरान माइग्रेशन पर आने वाले परिवारों की उपस्थिति में मल्ला जोहार विकास की वार्षिक बैठक भी की जाती है। समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू ने क्षेत्रवासियों से अधिकाधिक संख्या में उपस्थित होकर अपनी समस्याओं से अवगत कराने को कहा है ताकि वार्षिक अधिवेशन में आने वाले विभागीय अधिकारियों से समाधान के लिये कहा जा सके। श्री धर्मशक्तू ने जिलाधिकारी सहित अन्य को पत्र भेजकर अनुरोध किया है कि इस प्रदर्शनी में उपस्थित होकर मल्ला जोहार की समस्याओं की भी सुनवाई करें।

# 28 जनवरी से होंगे राष्ट्रीय खेल

देहरादून। उत्तराखण्ड स्थापना के 25 वें साल में 38 वें राष्ट्रीय खेलों का आयोजन करने जा रहा हे। इससे पहले धुंध बनी हुई कि यह खेल इस बार होंगे या अगले बर्ष। सीएम पुष्कर सिंह धामी ने कहा है कि हमारा प्रयास होगा कि इस बार आयोजन अभी तक हुए राष्ट्रीय खेलों में बेहतर हो। इसके लिये लगभग सभी जरूरी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। आयोजन को भव्य तरीके से करवाया जायेगा। जिन राज्यों में पिछले राष्ट्रीय खेल हुए हैं, उनके अनुभवों का लाभ लेते हुए यह आयोजन होगा।

प्रदेश में अगले वर्ष 28 जनवरी से 14 फरवरी तक राष्ट्रीय खेलों के साथ-साथ शीतकालीन राष्ट्रीय खेलों का भी आयोजन होगा। सीएम धामी और भारतीय ओलम्पिक संघ की अध्यक्ष पी.टी.उषा की भेंट के बाद तैयारियों में तेजी है। नई दिल्ली में पी.टी.उषा ने मुख्यमंत्री धामी से भेंट कर जब खेलों की मेजवानी की बात बताई तो धामी ने उनका आभार जताते हुए उन्हें बद्री-केदार के दशैन के लिये भी आमंत्रित किया। इस अवसर पर विशेष प्रमुख सचिव खेल अमित सिन्हा एवं स्थानिक आयुक्त अजय मिश्रा भी उपस्थित थे।

# एआईएएनजीओ का 6वां राष्ट्रीय सम्मेलन

देहरादून। आयुध एवं आयुध निर्माणियों एवं गणवत्ता आश्वासन संगठनों के अराजपत्रित अधिकारियों के अखिल भारतीय संघ का 6वां राष्ट्रीय सम्मेलन 13 नवम्बर को मिलन मन्दिर, रायपुर देहरादून में होने जा रहा है। इसकी तैयारियां शुरु हो चुकी हैं। इस बार का राष्ट्रीय सम्मेलन कई मायनों में महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें लगे हजारों लोग इस बात को लेकर आशंकित हैं कि आयुध कारखानों का निजीकरण हो सकता है जबकि रक्षा सम्बन्धी मामले सरकारी ही होने चाहिये। संगठन से जुड़े लोगों का कहना है कि जिस प्रकार से रेलवे सहित अन्य का निजीकरण किया जा रहा है उसी क्रम में आयुध कारखानों को भी कभी निजी कम्पनी न बना दिया जाए। यह गम्भीर मसला है।

देहरादून स्थित दोनों निर्माणिओं के समर्पित साथी उमाशंकर शर्मा, गिरीश चन्द्र उप्रेती, राजकुमार सिंह, डी.आर. शर्मा के नेतृत्व में तैयारी में जुटे कार्यकर्ताओं ने बताया कि नार्थ जोन की चार निर्माणियों आयुध निर्माणी मुरादाबाद, चण्डीगढ़, हजरतपुर व शाहजहांपुर के समस्त कर्मी आयोजन को लेकर उत्साहित हैं। इस सिलसिले में संगठन के प्रतिनिधियों की वर्चुअल मीटिंग भी हो चुकी है। बताया गया है कि राष्ट्रीय सम्मेलन में संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष जय नारायण रेड्डी और राष्ट्रीय महामंत्री अजय जी सहित देश में 41 आयुध कारखानों के अलावा डीजी क्यूए और जेआरडीओ के अलावा रक्षा मंत्रालय के असैनिक कर्मचारी भी हिस्सा लेंगे। इसमें वर्तमान की समस्याएं और भविष्य की रणनीति बनाई जाएगी।

## परिक्रमा

# खटीमा में गुण्डई बढ़ती जा रही है

खटीमा। क्षेत्र में गुण्डई बढ़ती जा रही है। किसी न किसी प्रकार के घपले और अपराध लगातार होना चिन्ता की बात है। उत्तराखण्ड आन्दोलन में अग्रणीय बलिदानी शहर खटीमा में जिस प्रकार से हालात बन रहे हैं वह सोचनीय है। छात्र राजनीति से लेकर वरिष्ठ नेताओं के बीच बार-बार चल रही उलझन से साफ दिखाई दे रहा है कि खटीमा में छुट्भैय्ये होड़ मचा रहे हैं।

इस बीच ताजा घटना में वन कर्मियों को कुचलने का प्रयास किया गया। वाहन से कूदकर भाग रहा तस्कर तारों में उलझकर गिर पड़ा जिसे टीम ने दबोच लिया। इसमें इसके 5 साथी मौके से फरार हो गये। विभाग की टीम ने भरचुरी के पास खैर की लकड़ी से लदे वाहन को पकड़ा। ग्राम चंदेरी फार्म टेढ़ाघाट पहुँची विभाग की टीम को पिकअप ने कुचलने का प्रयास किया। तस्कर पिकअप से कूदकर भागने लगे जिसमें एक तार में फंसकर गिर पड़ा जबकि 5 दूसरे वाहन में सवार होकर भाग गये।

यूपी से लगा हुआ सुरई रेंज पहले से सम्वेदनशील है। यहाँ सर्वाधिक तस्करी हो रही है। इसके अलावा खटीमा रेंज के जंगलों में लोहियाहेड मार्ग पर सबसे अधिक तस्करी हो रही है। किलपुरा रेंज के जंगलों में अवैध कटान कर तस्कर चम्पावत और नेपाल को भाग जाते हैं।

# भावनी सिंह की जमीन जब्त, हलचल

नैनीताल। बेतालघाट ब्लाक में उत्तराखण्ड सरकार ने सख्त कार्रवाई करते हुए पूर्व मंत्री और वर्तमान विधायक राजा भैय्या की पत्नी भावनी सिंह के नाम दर्ज भूमि को जब्त कर लिया है। बताया जाता है कि 2007 में राजा भैय्या ने बेतालघाट के सिल्टोना में अपनी पत्नी भावनी के नाम से खेती के लिये 27.5 नाली भूमि स्थानीय निवासी आनन्द बल्लभ से खरीदी थी। लम्बे समय तक इस जमीन पर किसी भी प्रकार खेतीबाड़ी का कार्य नहीं किया जा रहा था। असल में राजा भैय्या और भावनी सिंह के बीच पारिवारिक विवाद भी चल रहा है।

सरकार द्वारा भूमि कब्जे के बाद कई तरह की चर्चाएं होने लगी हैं लेकिन एसडीएम वीसी पन्त का कहना है कि तहसील क्षेत्र में खरीदी गई जमीनों को जाँच चल रही है। इसी क्रम में यूपी के विधायक की पत्नी के नाम की भूमि राज्य सरकारको निहित कर दिया गया है।

बताते चलें कि प्रदेश में सशक्त भू कानून लागने के लिये बार-बार दहाड़ रही उत्तराखण्ड सरकार के बाद बीते दिनों मुख्य सचिव राधा रतूड़ी दौरे पर आई थीं और उन्होंने सीएम पुष्कर धामी के सख्त भू-कानून की मंशा बताते हुए अधिकारियों से ऐसी जमीनों को चिन्हित करने के निर्देश दिये जिनका उपयोग किसी और काम में हो रहा है।

## देहरादून के चौराहों पर प्रदर्शन बन्द

देहरादून। शहर क्षेत्र के प्रमुख चौराहों पर आये दिन प्रदर्शन, जुलूस, धरना, रैली आयोजन से होने वाली दिक्कतों को देखते हुए डीएम सविन बंसल ने रोक लगा दी है। विस्तृत मंथन के बाद डीएम ने घण्टाघर, गांधी पार्क, एस्लेहॉल, चौक, दर्शनलाल चौक, तहसील चौक, बुद्धा चौक पर रैली आदि प्रतिबन्धित करने के आदेश जारी किये हैं।

## गंगोत्री-यमुनोत्री धाम कपाट2-3से बंद होंगे

उत्तरकाशी। चारधामों में प्रमुख गंगोत्री धाम के कपाट शीतकाल के लिये दो नवम्बर को अभिजीत मुहूर्त में बन्द किये जाएंगे। यमुनोत्री धाम के कपाट तीन नवम्बर को बन्द होंगे। गंगोत्री धाम के कपाट बन्द होने के बाद माँ गंगा के दर्शन उनके मायके व शीतकालीन प्रवास स्थल मुखबा में 6 माह तक किये जा सकेंगे। मन्दिर समिति के सचिव सुरेश सेमवाल ने बताया कि शीतकाल प्रवास के लिये डोली श्रद्धालुओं के साथ मुखीमठ प्रस्थान करेगी।

## शीतल ने माउंट चो ओयु चोटी फतह की

पिथौरागढ़। पर्वतारोही शीतल ने नेपाल और चीन के मध्य तिब्बत स्थित 26,864 फुट ऊँची माउंट चो ओयु चोटी तिरंगा फहराने में सफलता प्राप्त की। इसके लिये शीतल 5 सितम्बर को अभियान पर निकली थी। काठमाण्डू पहुँचने के बाद उन्होंने चीन का वीजा लिया। 24 सितम्बर को वेस कैम्प पहुँची और 8 अक्टूबर को चोटी फतह की।

## एक और टाइगर सफारी जोन होगा

रामनगर। क्षेत्र में एक और नया टाइगर जोन खोनल की तैयारी है। इसके लिये वन विभाग तैयारियां करने लगा है। बताया गया है कि इसका तीस किलोमीटर क्षेत्र होगा और इसमें तीन घण्टे तक भ्रमण कर सैलानी वापसी कर सकते हैं। तराई पश्चिम वन प्रभाग के चांदनी इको टूरिज्म जोन में सफारी के दौरान बाघ, हाथी समेत अन्य वन्य जीवों के दर्शन किये जा सकते हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

# उत्तराखण्ड में खेती पर संकट, 24 साल में गायब हुई कृषि भूमि

**डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला**

राज्य गठन के बाद उत्तराखण्ड में बहुत कुछ बदला है. लगातार हो रही औद्योगीकरण के चलते उत्तराखण्ड में कृषि भूमि घट रही है। कृषि विभाग की रिपोर्ट में यह चिन्ताजनक तस्वीर सामने आई है। कृषि विभाग के आंकड़ों के अनुसार साल 2011-12 से वर्ष 2022-23 के बीच कृषि भूमि 17 प्रतिशत तक कम हुग्र है।

उत्तराखण्ड के क्षेत्रफल के अनुसार करीब राज्य में 35प्रतिशत कृषि भूमि है, जबकि 65प्रतिशत जंगल क्षेत्र पर आधारित है। ऐसे में घट रही कृषि भूमि चिन्ता का विषय बन रही है। सरकार किसानों की स्थिति मजबूत करने की बात तो कर रही है लेकिन किसानों की स्थिति मजबूत होने के बजाय कमजोर हो रही है। पहाड़ में खेती के लिए पानी की कमी सहित अन्य बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए किसान अपने पारम्परिक पेशे से दूर हो रहे हैं। आंकड़ों के अनुसार, साल 2011-12 में जहाँ राज्य में 9,09,305 हेक्टेयर कृषि भूमि हुआ करती थी, जो साल 2022-23 में घटकर 753,014 हेक्टेयर रह गई है। यही नहीं आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में साल 2012 में 1.80 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न का उत्पादन हुआ, वहीं 2023 में उत्पादन बढ़कर 2.36 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पहुँच गया है। संयुक्त निदेशक कृषि विभाग कुमाऊँ मण्डल ने बताया कि उत्तराखंड में कृषि भूमि में कमी आई है लेकिन उत्पादन क्षमता बढ़ी है। बताया कि उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए किसानों के लिए कई तरह की योजनाएं चलाई जा रही हैं। इसके लिए उन्नत बीज दिए जाने के साथ ही आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसके अलावा पहाड़ों पर असिंचित क्षेत्र में सिंचाई व्यवस्था उपलब्ध कराई जा रही है। जिसके चलते किसान पारम्परिक खेती के साथ-साथ उन्नत खेती भी कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड में जैविक कानून लागू किया गया है। इसके तहत पिछले पाँच सालों में जैविक कृषि में लगातार बढ़ोतरी हुई है। वर्तमान में 2,15,000 हेक्टेयर में जैविक खेती हो रही है। यह प्रदेश के कुल कृषि क्षेत्र का लगभग 34 प्रतिशत है। अलग-अलग योजनाओं के तहत 4485 जैविक क्लस्टर भी संचालित किए जा रहे हैं। साथ ही स्थानीय स्तर पर जैविक उत्पादों की खरीद-बिक्री के लिए आउटलेट भी तैयार किए जा रहे हैं। उत्तराखण्ड में तेजी से खेती की जमीन घट रही है। कृषि विभाग की रिपोर्ट में यह अच्छी तरह दिख रहा है। रिपोर्ट के अनुसार साल 2011-12 से साल 2022-23 के बीच करीबन 17 प्रतिशत कृषि भूमि घट गई है। दशकों तक कृषि राज्य के किसानों की आर्थिकी का मजबूत आधार रही है लेकिन पहाड़ों में खेती के लिए पानी की कमी सहित अन्य बढ़ती चुनौतियों को देखते हुए किसान अपने पारम्परिक पेशे से दूर हो रहे हैं। कृषि विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, 2011-12 में 9,09,305

हेक्टेयर जमीन जहाँ खेती की गई थी। 2022-23 में यह आंकड़ा घटकर 753,014 हेक्टेयर रह गया। 2012 में उत्तराखण्ड में 1.80 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादित हुआ था। 2023 तक यह भी 1.77 लाख मीट्रिक टन तक गिर गया है। राज्य में प्रति हेक्टेयर औसत उत्पादन में वृद्धि हुई जो घटती खेती और कम होते उत्पादन के बीच एक राहत की खबर है। 2012 में 1.98 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर उत्पादन हुआ था लेकिन 2023 में यह 2.36 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर पहुँच गया था। विशेषज्ञों का कहना है कि यह उन्नत बीज और तकनीक के उपयोग से हुआ है। यहाँ गेहूं, धान, मडुवा, जौ और दालों का उत्पादन घट रहा है। कृषि विभाग की रिपोर्ट के अनुसार 2022 में 631946 कुंतल धान, 105946 कुंतल मडुवा, 40395 कुंतल झुा और 612535 कुंतल गेहूं उत्पादित हुए। 2023 में, धान का उत्पादन 561141 कुंतल, मडुवा 102215 कुंतल और गेहूं का उत्पादन 602725 कुंतल हुआ। अन्य फसलों का भी यही हाल है। राज्य में 70 फीसदी से अधिक भू-भाग वन क्षेत्र हो और खेती के लिए बेहद सीमित भूमि बची हो, वहाँ खेती-किसानी का छूटना न सिर्फ चिन्ताजनक है बल्कि भविष्य के लिए खतरे की घंटी है। संकट उस सूरत में और भी भयावह दिखता है जब यह तथ्य सामने आता है कि राज्य गठन बाद से अब तक दो लाख हेक्टेयर कृषि भूमि कम हो गग्र है। चुनाव में खेती और किसानी बेशक राजनीतिक दलों के लिए प्रमुख मुद्दा न हो लेकिन उत्तराखण्ड के ग्रामीण और किसान के लिए छूटती खेती परेशानी का सबसे बड़ा सबब है। राज्य गठन के समय उत्तराखण्ड में कृषि का क्षेत्रफल 7.70 लाख हेक्टेयर था, जो 24 सालों में घट कर 5.68 लाख हेक्टेयर पर पहुँच गया है। हर चुनाव में खेती किसानी और कास्तकार के आमदनी बढ़ाने के लिए राजनीतिक दल मुद्दे बनाते हैं परन्तु ये चुनावी वादे राज्य में खेती किसानी की तस्वीर नहीं बदल पाए हैं। हालांकि इस बार ये मुद्दा चुनाव से गायब है। हकीकत यह है कि खेती का रकबा साल दर साल घट रहा है। जंगली जानवरों की समस्या, सिंचाई सुविधा का अभाव, बिखरी कृषि जोत के कारण लोग न सिर्फ खेती छोड़ रहे हैं बल्कि पलायन की भी यह मुख्य वजह है। किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए सरकारें योजनाओं का मरहम तो लगा रही हैं फिर भी यहाँ उपजाऊ भूमि बंजर होती जा रही है। खासतौर पर राज्य के पर्वतीय इलाकों में कभी मंडुवा, झंगोरा, लाल चावल, राजमा, मटर की खेती से हरे-भरे रहने वाले खेत आज उजाड़ हो चुके हैं। राज्य के मोटे अनाजों को श्री अन्य योजना से बाजार तो मिला लेकिन जोत आधी रह गई। मंडुवा, झंगोरा, चौलाई, राजमा, गहथ, काला भट्ट परम्परागत फसलें है। श्री अन्न योजना से मोटे अनाज की मांग तो बढ़ी लेकिन पैदावार घटती गग्र। राज्य गठन के बाद मंडुवा का क्षेत्रफल आधा हो गया है। 2001-02 में प्रदेश में मंडुवे का क्षेत्रफल 1.32 लाख हेक्टेयर था। जो 2023-24 में घट कर 70 हजार हेक्टेयर रह गया। 30 फीसद से ज्यादा नुकसान पर ही मुआवजा मौसम या फिर अन्य प्राकृतिक आपदाओं की वजह से हर साल फसलें बर्बाद होती हैं। फसल बीमा योजना के तहत मानकों के अनुसार 33 प्रतिशत से अधिक नुकसान होने पर ही मुआवजा दिया जाता है। यानी नुकसान का प्रतिशत इससे कम है तो मुआवजा नहीं दिया जाता। 2023-24 में 86,376 किसानों ने फसल बीमा कराया है। जिसमें कुल 23,712 हेक्टेयर कृषि क्षेत्र शामिल है। किसानों की सोच है कि इन पारम्परिक फसलों को पैदा करना घाटे का सौदा है। क्योंकि लोगों का इन फसलों से अब परिचय समय के साथ नहीं हो पा रहा है। ये फसलें अब व्यापारिक स्तर पर फायदा नहीं दे पा रही हैं। मौसम बदलना इसका मुख्य कारण रहा है, जैसे समय पर बारिश नहीं होना, बारिश अगर होती भी है तो वह खेती के लिए पर्याप्त नहीं होती। इसी तरह बर्फबारी भी सामान्य से कम होती है। इन कारणों से फसलों का उत्पादन घटा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

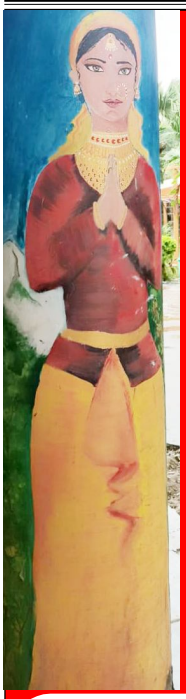

दशहरा एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

**गोविन्द सिंह जंगपांगी**
5/39 जोहार नगर
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

**खुशाल सिंह मर्तोलिया**
छड़ायल नवायद, तेज तुलसी अरावली बाटिका,
गैसगोदाम रोड, हल्द्वानी

**राजेन्द्र सिंह टोलिया**
5/29 जोहार नगर
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

**Hotel Bala Paradise**
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

**धमोत होम स्टे**
धरमघर/चकोड़ी

**Hayat Paradise**
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

न तेरा न मेरा Thats
**APNA GHAR चौकोड़ी**
HOTEL RESTRO BANQUET
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
मो.- 9458920379, 6396098804
Near by- ( माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर )
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

**माँ नन्दा आयरन एण्ड बिल्डिंग मैटेरियल**
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी
( सीमेन्ट, सरिया, टाइल, पेण्ट, सेनेटरी, हार्डवेयर )
गोदाम- जोहार एसोसिएट्स, बच्चीनगर- १, कमलुवागांजा, हल्द्वानी
मो.- 7409440813, 7500619761

**होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर**
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
**होटल लक्ष्य इन**
मदकोट
सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

**MARTOLIA FURNITURE**
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi, Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

Enjoy Beauty of Himalaya at
**MARTOLIA LODGE**
Family Guest House-
Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287


स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी ( नैनीताल ) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी( नैनीताल ) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)